Appendix 3

परिशिष्ट-३

देवदत्त `देव` कृत `जैसिंह विनोद

(पृष्ठ ३३० - ३८०)

श्री गणेशायनम: अथ जैसिंह विनोद लिष्यते

दोहा जननि शिवा जिहिं जनक शिव सिद्धि भवानी साथ
बिघ्न हरन सुभ करन जय देव सरन गन नाथ ।१

कवित्त देव सवै सुखदायक सम्पति संपति सर्वसु दंपति जौरी
दंपति दीपति प्रैम प्रतीति प्रतीति की प्रीति सनेह निचौरी
प्रीति जहां रस-रीति विचार विचार की बानी सुधा-रसबौरी
बानी को सार बखान्यौ सिंगार सिंगार कौ सार किसौर किसौरी।२

दो० राधा कृष्न किसोर जुग मूरति रति सिंगार
बसुधा सर्व सुधारन सर्व सुधा की धार।३

सौ खीची नृप बंस कौं सन्मुख सदां सहाइ
राखी जिहिं कीरतिलता फल लाहाइ उलहाइ ।४

पहिलें नृप खीचीनि कौ कहौं बंस - विस्तार
तब मैं बरनौं राधिका हरि मूरति सिंगार । ५

जग्य रच्यौ सर्वज्ञ विधि विधि हरि हर गुन गान
प्रगट्यौ पावक कुंड तैं नृप प्रचंड चहुआन ।६

कर्यौ काजु सुर राज कौ भर्यौ सुजसु संसार
धर्यौ धर्म चहुंआन नृप हर्यौ भूमि कौ भार ।७

सौ विस्वंभर संभर्यौ संभरि नगर नरिन्द्र
एक छत्र छिति पतिभयौ अवनी पर अवनिन्द्र ।८

कवित्त तंबू सौतान्यौ है जंबू दीप पर जाकौ जसु दीपक समीप करि राख्यौ ससिमान कौ
पूरब पुरंदर कुबेर मेरु मंदिर जलेस जमनेस से समानै जिहिं आन कौं
संकालाट भौट रूप सामगढ़ कौट जाके औट दुरे दिग्गज सुजौट कै दिसान कौ
मारौ भूप भूपनि विचार्यौ प्रभु रूप नित चार्यौ चक्क चक्कवै चितौत चहुआंन कौ।९

सकल महीजु थिर थाप्यौ राज बीजु जाम्यौ
पुन्य जल पीजु सुधा सागर की बीची है
चार्यौ सिंधु कूल, कूल उलह्यौ समूल
अनुकूल फूल फलदल साषा सुष सींची है
जाकौ करिवार परिवार लीलै बैरिन कौ
दान करवार दरबारकी दरीची है
दिल्ली सुलतान मध्य भूमि भूप भानु मारु
मालौ सुलतान चहुआन खान खीची है ।१०

दो० सिरौंज पति खीची नृपति तिहिकुल मालव - भूप
पीछै विक्रम भोज के भये त्रिविक्रम रूप । ११

वसुधा सीचौ सुजस- रस खीची कुल सिरताज
स्नान हेत गजसिंह जू आए तीरथ राज । १२

बंधु सरोज सरोजकुल ओज उजास अरिंह
कीनौ बास प्रयागपुर भाग बली गज सिंह ।१३

विधि वल प्रबल मलेछ कुल वाढ्यौ विपुल विरुद्ध
देवसिंह गजसिंह लौं गरजि लई जय युद्ध । १४

राषि लिए गौतम नृपति प्रबल मलेछन मारि
आइ मिले सुष पाइ चित सुभ सम्बंध विचारि।१५

चौरासी गढ़पति सदन रैंभनी गढ़ सुमथान
गौतम नृप गजसिंह कौ दीन्यौ कन्यादान।१६

अंतर अंतरिवेदि के गंगा जमुन समीप
बसे कछुक दिन प्रेम बस रैंभनीपुर नृप दीप ।१७

खीची नृप गजसिंह के जनम्यौसुत जयसिंह
महादानि गुन ज्ञानिवर रनमुख निरभयसिंह ।१८

मातवंस संनिहित हित सुत इत राषिय कोटि
आपु गए गजसिंह जू निज रजधानी लौटि ।१६

चहुआंन खीची नृपति वत्स वंस संप्रीत
इत हिततैं जयसिंह जू गौतम गाए गीत ।२०

श्री जयसिंह कुमार के प्रगटे पाल्हन देव
नौतम नेह बढ़ाइकै गौतम कीनी सेव।२१

श्रीनृप पाल्हन देव सुत जनमे साहिव राउ
राजकाज गौतमनि संग पर्यो निसानहिं घाउ।२२

पन्द्रह सै पचपन १५५५ समै रण हनि सत्रु समाज
रैंभी साहिव देवजू कियो सकल गढ़ राज ।२३

प्रगटे साहेब देव सुत कूरम देव महीप
श्रीनृप कूरम देव सुत डोमन ज्यों कुलदीप ।२४

डोमन देव महीप सुत खींची जाजा देव
जाजा तनै प्रताप भो राजनि राजा देव ।२५

श्री प्रताप भूप सुत परसराम नरनाह
जम्बूदीप महीप जेहि बसैं बांह की छांह।२६

परसु राम नृप के भए नृप रन-हरि हरि केस
हरि केसै सेवत चरन देस विदेस नरेस ।२७

कवित्त देव गजसिंह के सपूत जयसिंह जू के
प्रगटे पाल्हन देव देव दुति सांचयै
पाल्हन महीप कुल दीपक साहैब देव
साहैब के कूरम सूर मद माचए

कूरम महीप के वडोमन देव डोमन के
जाजा देव जगु जस बाचए
जाजा के प्रताप औ प्रताप के परसराम
तिनके अड़ारू सिंह लोक पाल पांचए ।२८

नृपति अडारू सिंह को जन्मनाम हरिकेस
दान महेस दिनेस तप गौरव ज्ञान गनेस ।२६

कवित्त जाको देस देसनि संदेसनि चलतु जसु
देस हूं विदेस जाके भिक्षुक नरेस से
राष्यो नहिंलेस अरि कुल को क्लेस दै दै
धरे नष केस दरवेस दरवेस से
खीची संभरेस महाराज हरिकेसजू के
चाकर दिनेस से सुसाहेब हैं सेस से
साधक धनेस से सभागुरु गनेस से
सपूत हैं महेस से सुनाती अमरेस से ।३०

भाष्यो माषि कै अभिलाष्यौ राखि कै न कछु
राखि कै दुवन अंत दसहूं दिगंत के
भूप हरिकेस हरि के समीप जाइ बसे
तज्यो पाक सासन को आसन दिगंग के
पुन्य रसपोषि पर तोषि निरदोष
पद मोष लै सिधारे परलोक में अंत के
दीनो सुतनाम तीनो वर्ग अभिराम
रूप अर्थ धर्म काम धरि धाम भगवंत के।३१

महाराज हरिकेस सुत षट मुष बलिवंत
तिनि में तीनि त्रिलोक पति, त्रिगुनांतम सुरतंत।३२

मर्दन हरि भगिवंत नृप सभासिंह वर नाम
तीनौ सबूज त्रिदेव रुचि, कै सुचिधाम त्रिराम। ३३

दरिघु लघु सोदर सुषद भयै राइ भगिवंत
धरिज निधि वारिज जलधि अधिक वरि वलिवंत। ३४

बाजी जिहिं नौमति विजै गजरा जी संयूत
गाजी नृप भगिवंत भुव गाजीपुर-पुरहूत । ३५

डंका कौ सनत डग मगत कुतंक मानि
लंका लौं संसक थल वंका वरिवाने कौ
भूप भजि ठाढ़े हौत गूढा गाढे तजि ढूढ़त-
फिरत मठ मूढ मुनि थानै कौ
सीची हरिकेस कै नरेस भगिवंत डर
विडरि डराने देस राजा राइ राने कै
वंद रहैं बंदर विलाइत विलानी जाइ
पाट लागे पट्टन पयाने पैसषाने कै । ३६

सीची मालवेस हरिकेस कै सपूत
दान भरु पुरहूत बरसंत सुख मानि कै
देव नरदेव जिहिं सेवक है सेव करैं
देवता असिसित पिता हितु जनि कै
अग्गवल दिग्गज अग्गहै दिगंतनिते
खेलत मरोसे भगिवंत के सुजान कै । ३७

दोहा
विजय सिद्धि भगिवंत कौ दीन्ही सीता राम
सुख संपति संतति सुनति जसु वसुमति विश्राम । ३८

जोग जग्य जुग जुग किए श्री भगिवंत साहाइ
विधि हरि हर जुत रूप जिहि रूप अवतरै आइ । ३९

रूप राइ जयसिंह अरु कीरति सिंह सुनाम
तीनौ सुत भगिवंत के धर्म अर्थ अरु काम ।४०

तिनमैं श्री जयसिंह जू किये दैव सौं हैत
जय संपति आगमन जिहि कियौ सुजस कौ सेतु ।४१

कवित्त

दूलह नौल दौलत दुलहिया कौ
रसिक सिरोमनि चतुर चित चाड़िलौ
मौजनि दरयाउ भारी फौजन कौ राउ
घालै सूर सिर घाउ रन दान अति आड़िलौ
गरीब नेवाज सिरताज सिरताजनि कौ
अषंडल रूप राज मंडल कौ मांड़िलौ
जाकौ रूप राइ राइ कीरति से भैया
रैया राइ भगिवंत कौ कहैया लाल लाड़िलौ ।४२

ज्ञान गरुडासन पुहुमि पाक सासन सौ
तेज कौ हुतासन प्रभुत्व पन पनि कौ
न्यारौ नृप नीतिकौ अन्यारौ रन जीति कौ
उज्यारौ दान रीति प्रान प्यारौपर वीन कौ
राइ भगिवंतसिंह जू कौ जयसिंह राइ
विक्रम त्रिविक्रम वहिक्रम नवीन कौ
संतनि कौ लागु गुनवंतनि कौ अनुरागु
भागु सेवकनि कौ सुहागु सुंदरीन कौ ।४३

नृप कुमार जयसिंह ज्यौं सुंदर नंद कुमार
दैव सैवकनि कल्प तरु द्विज संकल्प उदार ।४४

जानि जानि सुषदानि जन भजत जानकी जान
कुल कुमुदाकर कलानिधि पूरन सकल कलान ।४५

द्दैवसत जयसिंह कै श्री राधा हरि दैव
श्री जयसिंह विनोद रस वरनि कह्यौ कवि दैव ।४६

रति सिंगार मूरति सदा सुंदर स्यामा स्याम
होउ सदा भगिवंत की संतति कौ सुखधाम ।४७

सत्रह सै अरु उन्यासी १७७८६ संवत विक्रम वर्ष
मारग सुदि सशि सप्तमी लिषि जयसिंह सहर्ष ।४८

वरनि कह्यौ सिंगार रस जुगल रूप अभिराम
ग्रंथ पंथ मुनि भरत कौ नृप-विनोद कहि नाम ।४६

श्री वृषभान कुमारि जय जय श्री नंद कुमार
श्री जयसिंह कुमार कौ सुहित सहित परिवार ।५०

इति श्री महाराज कुमार श्री जैसिंह राइ विनोद देवदत्त कवि विरचिते राजवंस वर्णन पूर्वक श्रृंगार रस वर्णन प्रस्तावना प्रथम विनोद : ।१। अथ श्रृंगार रस वर्णनं ।

दंपति प्रेमांकुर प्रथम सौ सिंगार थिति भाव
ताहि विभाव बढ़ावहीं प्रगटावैं अनुभाव ।५१

सातुक संचारीन सौं भीतर बाहरै पूरि
रति पूरन सिंगार सौ जोबन जीवन मूरि ।५२

अथ स्थित्यादि निरूपन

रति उपजति दर्सन श्रवन प्रिय सिंगार थिति मूल
चंद्र चदनादिक तहां हैं विभाव रितु फूल ।५३

सरस चेष्टा चपल दृग मंद हास अनुभाव
बाहिर भीतर बसु ८ अमर ३३ क्रम संचारी भाव।५४

अथ प्रेमांकुर सवैया

नंदलला वृषमान लली भए सामुहें देव संजोग सुभै के
लोइन लोइन लागे अनूप दुहू दुहूके रस-रूप लुभै के
मंद हंसी अरविंद ज्यों विंद अंचै गए डीठि सों डीठि खुभै के
कंज की मंजि मैं षंजन मानो उड़े चुनि चंचुनि चंचु चुभै के ।५५

रति यथा

षिन एक ते भाइ गयो सोकछू तरु नीको तप्यो तन तावकु सो
नव नेह सनी छवि सौरईकी न छुटाए छुटै थिर थावकु सो
सेंषियान सो देव छिपै न छिपाए लग्यो अषियान मैं जा वकु सो
द्रगकोर नचाइ चितै चितचोर चलाइ गयो चितचावकु सो ।५६

रीत पोषक विभाव आलंबन यथा

नव नायक पौन हंस्यो निकस्यो मिलिवेलि वधू करि केलि कुटी
सुनचावत गावत कोकिल भौंर बजावत चंपकली चिकुटी ।
हरि राधिका खेलत देव तहां बंसुरी सरतान तजी त्रिकुटी
नर नागर नैननि संग लै रंग उठी नचि नौल नटी भ्रकुटी ।५७

उद्दीपन विभाव यथा

बगर के बाग मैं उमड़ि अनुराग रह्यो घुमड़ि छटासी बन कुंजन की भिरकी
देव से बंसी गुलाब मल्ली कचनार अनार डार पांडर महोउर न थिर की
आवकुलबकुल कंदव कुंद मंदार उदार भू अमंद मकरंद बिंदु दिार की
वोरन की वोरई लै औरई ह्वै आई देव, एक बार उभकी किवार खोलि खिरकी
।५८

अथ रीति सिंगार के अुभावक अनुभाव

नैन भरि नैसुक निहार्यो जब हीतें
तब हीते न छुटत हिय हीते सखि सौरई
देषे विनु देवनष सिष विष वीछी को सो
विखरो परतु रामे रामनि मैं रौरई ।

खेलन गई ही री अनोखी सषियन छाडि
लिलिति न आई अषियन विष कौरई
बाट हू चलत वाट परै वृज पौर पौरि
दौरि दौरि लागै वान वौरन की ढौरई ।५६

लाल गुन जाल परे लोयन खंजन ललक नवल कर पखियन कौ
प्रेम की कसौटनि सौं हेम सौ कसत कुलनेम रहतु लौक लिकि लषियनि कौ
मौहै विदुरावत दुरावत वनै न डीठि फांसी भयौ हांसी को समूह संषियन कौ
राखै अवलाजु अवलाज परु मेरौ तऊ करौ षट पार भट मौरा अषियन कौ ।६०

श्रृंगार प्रकास संचारी ।दो०।

संचारी तंभादि कहि आठ भाति सारीर
निरवेदादिक अंतर तैंतिस कहियै धीर ।६१

सारीर यथा

तंभ,स्वेद, रोमांच अरु वैपथु अरु सुरभंग
विवरनता आंसू प्रलै ये सातुक रज अंग । ६२

गरे गुंज माल धरे मंजरी रसाल रस पुंज पग्योई सो लग्योई दृग ह्वै रहै
आली को अकेली मिले पूछनि के लोभनि पै पूछिन सकति छवि छौमन ही छ्वै रहै
उठै जो फरकि उठति न जीभ मुख आषर कढै न उर आनंद सो वै रहै
लाज की मचनि देव नैननि नचनि सोचि बचन कढै न सकुचनि चुपह्वै रहैं ।६३

अंतर संचारी

नैननि न हेरति न टेरति सुनति वैन
ही मैं हरि गुन उधेरति कुनति फिरै
भृकुटी नचाई भाल त्रिकुटी उचाइ करि
चिकुटी रचाइ चित चायन चुनति फिरै

सुनी अनुसुनी करिकानन कनेषा देखि
भीज अँसुवन कन सुवनि सुनति फिरै
दौरि दौरि पौर द्वार षिरकी किवार षोलि
गुपत तमासे सी सु सांसै लै धुनति फिरै ।६४

दोहा × × × सचारिनु की भीरि
तातैं मिलि मिल उठत है मानसु अरु सारीर । ६५

विभावनि बढ़ि अनुभावनि प्रगट ह्वै संचारिनु प्रकाश रतिपुष्ट श्रृंगार - यथा -

दूलह नील नई दुलही उलही हिय प्रेम की वेलि नवीनै
नैन दुहूं के चले चित चैन चुकैन रुके न झुके पट झीनै
रंग रली उरलीने उछाह अली मुसक्याइ चली परवीनै
प्रेम की संपति दंपति देव हिय हिय षोलि मिले रसभीनै ।६६

दो० इहि विधि भावनि रति बढ़ें होइ सकल सिंगार
सो रति पहिलें प्रिय श्रवन दरसन होत उदार ।६७

रतिहेतु प्रिय श्रवन यथा-

सांवरा सुंदर नंद कुमार सु आवतु है नित हीं इत ही मैं
षोरिनु षोरिनु गोकुल गोरिनु टोहत सोहतु है हितही मैं
यों सुनि देव कहू गुनि कै गुन भावती षेलत ज्योतिमहीमैं
रूप लुभ्यो उर आइ उभ्यो सुचुभ्यो अँषियान चुभ्योचित ही मैं ।६८

-प्रिय श्रवन तैं प्रिय चित्र दर्शन-

चित्र विचित्र लिख्यो पिय मित्र लख्यो त्रिय देव सु प्रेम की सौरी
औचक ही अनिमेष कनेषनि देषनि ही मैं भई चित चोरी
पीठि दै दै पटतानि चितौति सु सौति नवीन सषीन की औरी
लाज के साज इलाज विना नव नेंग समाज न जानति भोरी ।६९

स्वप्न :

धाइकै अंक मैं सोय निसंक सु पंकज सी अषियान भका भकी
त्यौं सपने मैं मिले अपने प्रिय प्रेम पनै छविं ही की छका छकी
ठाढ़े ह्वै भैंट भरी भुज गाढ़े ह्वै बाढ़े दुहूं के हिए मैं सका सकी
देव जगी रतिया हू गई न तिया की गई छतिया की धका धकी ।७०

द्वार ह्वै कढ़्यौ री व्रज ग्वार लिये नंद क्वार मैं दुरि न्यारौ है निहारौ सषिपनतैं
ता घरी तै चंचल चितौनि चित चौर चितु लै गयौ चुराइ मधु जैसे मषियन तैं
रूप रस सागर अनूप गुन आगर मैं, जाइ मिल्यौ हंस उड़ि प्रेम पंषियन तैं
चारौ दिस रैनि दिनु दूसरौ न देखौ छिनु एकौ विसरै न निस रैन अषियन तैं ।७१

लैकर वीन लला परवीन वजाइ नवीन कलानषसौ नष
सौ सुनि कैधुन आई उतै वृषभान लली सौलगी नष सौलष
जाइ मिली अंखिया पट-ओट मनौजु मनोज धुजा भष सौ भष
कानन तानन राखि गए मृदु भाषिकै चाषि गए चष ज्यौं चष ।७२

- इति श्रृंगार स्वरूप अथ श्रृंगार-भेद दोहा-

रस सिंगार के भेद द्वै हैं संजोग वियोग
प्रथम एक विधि दूसरौ चौविधि वरनत लौग ।७३

सौ पूरव अनुराग अरु मान प्रवास वियोग
चार्यौ भेद वियोग के आनंद रूप संजोग ।७४

प्रथम होत दंपतिन के पूर्व नुराग वियोग
तहां दसा दस विरह कीता पाछे संयोग ।७५

फिरि वियोग संजोग तैं मान प्रवास ससोग
या विधि मध्य वियोग के होत सिंगार न योग।७६

अथ पूर्वानुराग की प्रथम दसा अभिलाष

देषि देषि सुनि सुनि सुरति रस सुर तरुवहु साष
गुप्त प्रगट फल फूल दल प्रथम होहि अभिलाष ।७७

गुप्ताभिलाष

बैठी सीस मंदिर मैं सुंदरि सवार ही की मूंदि कै किंवार देव छवि सौं छकति है
पीति पट मुकुट लकुट वनमाल धरि भेषु करि पीको प्रति विंव मैं तकति है
होतिन निसंक उर अंकुभरि भैंटि वै को भुजनि पसारति समैटति जकति है
चौंकति चकित उचकति चित्वति चहूं भूमिललचाति मुख चूम न सकति है। ७८

प्रगटाभिलाष

गौनै की बात चली गुर लोग मैं भौं हनि भोग संजोग विसेषै
लोहन कोयन लाल की लाली ह्वै आली की ओर कछू लषिलेषै
आनंद सो उर मैं उमग्यो सुष साजनि लाजनि पूरि परेषै
भूमि कै भूमि षनै नष तेंमिषि नैननि नैन कनेषनि देषै । ७८

द्वितीय दसा चिंता

लाजहि तौतजिवोई इलाज अकाजनि को रहि है तौ रहौ किन
देव सदेसनि देह विदेह मिलै उड्डु ह्वै दहि है तौ दहौ किन
प्रीतम मीत मिलाप की चौंति अभीत गरो गहि है तौ गहौ किन
क्यौं हू मिलौ हिय खोलि हिलौ कहूं कोऊ कछू कहि है तौ कहौ किन

असमरन त्रितीय दसा

सुंदर सरूप ब्रज भूप को कुंवर सषि, आनंद अनूप अषियन मैं घुमि रह्यो है
जागत विवको नहिं लागत न एको पल, कोपलु लगावै छवि छोभ छुमि रह्यो है
देव चितवनि लोल बोलनि हंसनि फंसि, कुंडल कपोल मन लोभी लुभि रह्यो है
देषन न भूलै अनुदेषै उर-सूलै हितु, लालचु लगाइ चित लाल चुमि रह्यो है ।८०

गुन कथन चतुर्दसा

सुंदर सावरो रूप को मंदिर चाल चलै गुन गर्व गहीली
जोवन कै वल मानी हंसै अलसानी लषै अषिया उनमीली
देव सुनै सव सीस धुनै अवलाज तजै अवलाज लजीली
रै है क्यों ऊजरी दो कुल की व्रज गूजरी गोकुल की गरवीली ।८१

उद्वेग पंचमदसा

वैरिनि सेज करेजिन सालति ज्वालज्यों तेज तपै अतिया मैं
फूल उतै करि सूल महादुख मूल लगैं सुष की वतिया मैं
वीरी वगारि दै नीरी न ल्याउ सुहाति न कातिक की रतिया मैं
आंखिन ओट रहा किन राखि कृपाकर छेद करै छतिया मैं ।८२

प्रलाप षष्टम दसा

कूकनि कुहू की मिसि फूकनि कुहू की हिय
हारी हों दुहूं की हरि जाऊंगी तो जाऊंगी
कुल दुल ही पनो दुलार धरि राखोरी
पराए घर वार परि जाऊंगी तो जाऊंगी
गहोंगी निसंक भरि अंक देव काहू को कि
या व्रज कलंकु करि जाऊंगी तो जाऊंगी
खोलिदे किवारी खिन आंषिन खिलारी को
मिलोगी तो मिलोगी मरि जाऊंगी तो जाऊंगी ।८३

ग्रीषम वन भकभोरी वन वेलि ज्यों विरह
आगि अंगनि उमगि जरि जाऊंगी
उरध उसासनि उगिल चिनगारी छुटि छुटि
फुलभरी ज्यों फुहारे भरि जाऊंगी
तीषी दृग कोरनि की मारी मुष मोरन की
मार की मरोरन मुरकि मरि जाऊंगी
देव जो मिलोगी न सनेह भीजि भाउन सों
मूरति सलोनी अंसुवनि गरि जाऊंगी

उन्माद सप्तम दसा

कब हूं अकेली गृह कैली के बगीचा बन
बैली के नवेलि धाइ पाहन परति है
कब हूं विलोकि बाल तरुन तमाल करि
घूंघट विसाल घन कुंज मैं घिरति है
कैसी भई देव पिक मोरनि निहारैत हैं ह्वै
भौंरनि चकोरनि कूंत मही भिरति है
राषि कै सकोच धाम मोचति नहीं सु व्रज
धाम धाम स्याम को बुलावति फिरति है ।८५।

व्याधि अष्टम दसा

मंजुल मंजरी पंजरी सी ह्वै मनोज को ओज संभारती चीरन
भूष न प्यास न नींद परै परी प्रेम अजरिन के जुर जीरन
देव घरी पल जाति घुरी अंसुवानि के नीर उसास समीरन
आह न जाति अहरि अहे तुम्हे काहू कहा कहौं काहू की पीरन ।८६

जडता नवम दसा

जो जो कोई कहै सोई सोई करि थाकी देव
जोई सोई कहै करि गयो कछू डावरो
राजु करी आसी लाजु करतु अकाजुकाहू
आजु तौ समाज घर वाहिर को धावरो
रोवति सी सोवत न वासर विभावरी हूं
बावरी हूं के सोच नभयो है व्रज- बावरो
बोलति न साथ धाइ डोलति न हाथ पाइ
षोलति न हियो हाथ पाइ रूप रावरो ।८७

अभिलाषादिक नव दसा मध्यपूर्व अनुराग
दसम दसा करुना बिरह सुद्ध करनि दुख दाग ।८८

ताते सों नहि वरनिए जो वरनियै सुभाषि
एक सुकवि तिहं मूरछा बरनतु है रस राषि ।८६

अथ दशम दसा मूरछा

औध दिन अधिक विती ते उर आधि बढ़ि
हाधिक जीवन कर्यो ऊध सांस सरि सरि
व्याकुल ह्वै घूमि चूमि भूमि गिरी फूमि तिय
हरै लोगु टेरै हरिलीनी कौने हरि हरि
ताही समै प्रान पति आएते सुनाए सुनि
आए तन प्रान जम काल हूं सों लरि लरि
पंकज मुखी को मुख पंकज मलिनि चूमि
लैत परजंकते ससंक अंक भरि भरि ।६०

इति पूर्वानुराग की दस दसा अथ सखीको नायक सों विरह निवेदन

आसुन के सलिल सिराती एन छाती जो
उसास लागि कामगि भसम होती हीतती
को सरसिसिरषि हूते कोरी जो न होती तो
किसोरी से कुसुम सर कैसी भांति जीततो
देव जू सराहिए हमारो ह्यांकु न्याउ करि
नाहित अहित चैतु करतो जु चीत तो
कोकिला के टेरत निकसि करिजातो जीव
जो तिहार गुन बुनत उधैरत न बीत तो ।६१

सखी की सिदा

दूल है सुहाग दिन तूल है तिहारे तिन
तूल हैं निहारे सो अपान ही कीतूल है
मूल है न भाग की प्रवाहु सो दुकूल है
दुकूल है उज्यारो देव थारो अनुकूल है

कूल है नदी को प्रात कूल है गुमान री
अकूल है सुजान तौ न जीव अकूल है
हूल है हिय मैं हिय हूल हैं न चैन री
विहार पल हूल है निहार पल हूल है ।६२

दूती जथा

ताननि रंगीन अभिलाष राषि सकौगनि
प्राननि प्रवीन विषु कानन गिलत हीं
देव द्रग मूलनि के सूलनि मरौंगी द्रुम
वेली दल मूल निते फूलनि खिलत ही
राखै अलाज अलाजु कौनु काजु पसु पक्षिन-
समाज पेषि प्रेम सौ मिलत ही
वृंदावन आज वनमाली बनि आवतुरी
आली बनि आवतु तुम्हैं हूं तौ मिलत हीं । ६३

प्रथम प्रपंच मिलान

दूसरनि दुसह रिस आसू सनि रुसनि
रह्यौ मन मसूसनि ही मसकि मसकि कै
देव जू निपुन गुन वरनि वरनि काम
सरनि करेजे रहै कसकि कसकि कै
चैत उपवन चितै पवन अचेत कीनौ
संकैत सुहायौ चित चसकि चसकि कै
वदन मयंक द्रग पंकज मिली मिलाय
धाय भरि अंक स्यामा मसकि मसकि कै

सुष सदन संगम

जागी सब जामिनि पलक जब लागी
तरुनिन की नीद रूनी पयौद भरिलई है

तासमै मह्ल लाल आऐ लह लहे मन
उलहे मनोरथनि मोद भरि लई है
उनीदी उमै उमेगु भरी औलति वैउति उर
उरोज पीठि चहूं कोद भरि लई है
झीनै पट लपटी झपट गहि गोद भरि
आमोदनि आनंद विनोद भरि लई है ।६५

सखी को परिहास

ओठनि ओठ दै कंठनि कंठ हिए मैं हियो
दै, षये निषर षगि
जानु मैं जानु भुजानि भुजा पर जंक मैं
अंक मैं अंकु थिरै थगि
एहो लजीली अहो गरवीली रंगीली
नयो हितु नातो लियो अगि
संग ही संग कै अंग गही अंग लाल
लई अपने रंग ही रँगि ।६६

इहि विधि भावनि रति बढी प्रगट्यो प्रेम दसानि
पूर्ण सिद्ध सिंगार रस नव संगम सुख दानि ।६७

पात्र मुख्य सिंगार की सुद्ध सुकीया नारि
प्रथम प्रेम नव संग कै दरै परै दिन चारि ।६८

इति श्री महाराज कुमार श्री जैसिंह विनोद देव दत्त विरचिते पूर्ण सिंगार भावदसा भेद भेदांतर प्रथम प्रेम नव संगम वर्णनों द्वितीय विनोद : ।२

अथ नाइका वर्नन

दोहा

मुख्य रसनि सिंगार रस दंपति है आधार
दंपति संपति नायक ताको करत विचार ।६९

कुल तिय तरुनी सील निधि सलज सलौन प्रवीन
विभौ विभूषित नाइका पीतम प्रीति अधीन ।१००

मनकायक वचनायका माया रूप विलासु
मनसा कायक वाचिकौ तीनि अवस्थातासु ।१०१

तहां अवस्था मानसी नौ रस त्रिगुन त्रिभेद
आनंदा अरु विमोहा कहत प्रकासा देव ।१०२

अथ मानसी द्वादस अवस्था तत्रा दौ द्वादस वर्षे प्रथम नाइका आनंदा

रस सिंगार अरु हास्य रस अद्भुत भय रज रूप
है आनंदा अवस्था मन आनंद सरप ।१०३

यथा

हारीं सिखाइ सिषावन हारी न सीषि सिषी विसवानि विनासी
देव सिखाइ दियो यकवार मन्वैजुमनोज गुरु अभिनासी
जौवन ज्योति सौं [illegible] जीति लई जिहि कातिक राति की पूरनमासी
मैचक सी चित चैननि में वस्यो नैननि नेह सु बैनन हौंसी । १०४

अथ मानसी द्वितीय दसा विमोहा

वीर रौद्र करुना रसनितम गुन मई वषानै
कहौ विमोहा तामसी मन तामस पहिचानै ।१०५

यथा

प्रीतम मीति नई नित प्रीति रिती तिहते जब हतिन लागे
लै करुना उतसाह कथा उतसाह सुवैन अधीतन लागे
देव जू जोतिहिए बिस मैं रिस मैं निसवासर वीबन लागे
चातुरताई की घातें हितू सुचितौ निहि तेवितरी तन लागे ।१०६

अथ मानसी त्रितीय अवस्था

सत्व गुन महँप्रकासा शांत भयवीवत्स
परम अवस्था नाइका मन प्रसाद गोवत्स ।१०७

दिनां दस जोवन जीवनु री भरियै पचि होइ जु पै मरिवैना
सबै जु जानति देव सुहाग की संपति मौन रही भरि वैना
कहा कियो सौति कहाय कै काहूं लगै पिय लोभतऊ लरिवैना
असीसन हू के लही करि वैन कछू अब मोहि रही करि वैना ।१०८

इति नायका की प्रथम अवस्था मानसी

होत अवस्था मानसी द्वादस वर्ष पर्यंत
यों ही काइक नाइका सांत सात संवत ।१०९

अथ नारी की द्वितीय अवस्था -कायक

देव अदेव गंधर्व अरु कहै सुध्व गंधर्व
अरु मनुष्य गंधर्व अरु मनुष्य अंस सु सर्व ।११०

सात सात वय वर्ष पर आवत पांचो अंस
नारि वर्ष पैंतीस लौं तिहि तिहि अंस प्रसंस ।१११

देवि देवि गंधर्व अरु गंधर्वी त्रिय होइ
सु गंधर्व मानुषी अरु सुद्ध मानसी होइ ।११२

पाचो कायक भेद करि कही नाइका पांच
उपरांति पैंतीस तें रस की रहति न आंच ।११३

अमर अंस गौरी कही लक्ष्मी गंधर्वंस
मानुष अंस सरस्वती सुखदाइक सर्वंस ।११४

अमर अंस चंदन उचित गंधर्वा संभोग
मानुस अंस सुवंसकर जानत सज्जन लोग ।११५

स्यू वर्षय देवता कन्या मूरति वंत
साढ़े दस सत अंस तिहि मिलित सुचौदह अंत ।११६

तासौं चौदह वर्ष लौं सुद्ध मिलित अमरंस
भोग जोग नहि भामिनी यों अपि गंधर्वस ।११७

यथा

नासिका मैं नथ मोती लुरै बडरै मुकतान की कानन बारी
कंकनी हाथ बजै पग पैंजनी ओढ़नी है जरतारी
पूरन इंदु तैं सुंदर आननु रूप कौ मंदिर राज दुलारी
धाइकै गोद बढ़ावति मोद विनोद भरी वृषभान दुलारी । ११८

अथ देव गंधर्वी

जो आनंद कौतुक वती कछूक लज्जावंत
सुदेव गंधर्वी वधू रत नव वर्ष पर्यंत ।१२०

देविगंधर्वी (२)

वृषभान नंदनी को वृंदावन षोरि मिलि
षेलन लै आईं वरसाने की कुमारिका
मुष को उज्यारो चार्यो ओर चितै सकुचति
चंद जानि चितवै चकोरी सहचारिका
भूपर अनूप रूप देव व्रज देवी देषिवे कों
बन देवता भई दिवाभि सारिका
कोकिलकलापी कुल वलित उमा है चित
चाहै चंचरीक औ सराहै सुक सारिका ।१२१

आवौ ओट रावटी झरोषा झाकि देषो देव
देखिवे कौ दाउ फिरि दूजे धाम नाहिनै
लह लहे अंगरंग महल के आंगन वह ठाढ़ी
वाल लाल पगन उपाहनै
लौनै मुख लवनि नचनि नैन कौननि की
उरतिन और ठौर सुरति सराहनै
वाम कर वार हार अंचर संभारै करै
कैयो छंद कंदुक उछारै कर दाहिनै । १२२

गंधर्व मानुषी यथा

जो लज्या अनुराग रँग रँगी सुभाव प्रसन्न
सु गंधर्व मानुषी वय आठवीस संपन्न ।१२३

पंक रुह नैनी संकेत परधाम बैठी
वृजग्राम अभिराम रुचि रोपिका
तिनमें अनूप रूप रासि मद्धिराधा मानौं
घेरै सरदिन्दु कुमुदिनी थल थौपिका
उमडी रसालै वै विसालै ताल ताना वलि
रंमादिक दंभ अंब लैप अवलोपिका
बाढयौ रंग रागु देव वरस्यौ सुहाग भई
भाग भई भूमि औ सुहाग भई गोपिका ।१२४

पीछै परवीनै वीनै संग की सहेली आगै
भारडर भूषन डगर डारे छोडि छोरि
मोरि मुख मोरनित्यौं चौंकति चकोरतित्यौं
मोरन ही उर भरि देखै नष मोरि मोरि
एक कर आली करऊपर ही धरै हरै हरै
पग धरै देव चलै चित चोरि चोरि
दूजे हाथ साथ लै सुनावत वचन जाति
हंसनि चुनावति मुकुत माल तोरि तोरि ।१२५

इहि विधि कायिक पांच विधि कहत नाइका भेद
अब बरनत वाचिक वधू जाहि वखानत वेद ।१२६

अथवाचिक भेद

कहि मानस कायक कहे वरनतु वाचिक भेद
जे प्रसिद्ध साहित्य प्रति सुनत हरत हिय खेद । १२७

कहीं स्वकीया परकिया अरु सामान्या नारि
तीनि भाँति की नाइका वाचिक भेद विचारि ।१२८

स्वकीया पतिरति सौ त्रिविधि मुग्धा मध्या प्रौढ
द्विविधि परकीया सु उपपति रति उढारु अनूढ ।१२९

सामान्या सम जगत मैं धनु रत सौ परनारि
एक सुइहि विधि तीनियाँ तैतालिस निहारि ।१३०

अथ स्वकीयादि के विसेष भिन्न भेद सौरठा

बालापन के अंत जोवन अंकुरते प्रथम
कन्या मूरति वंत दैवी वरनत देव कवि ।१३१

ताहि उवत वय संधि विविधय समुग्धा नाम
नवला अरु नवजोवना नवल अनंगा वाम ।१३२

रति सलज्ज तिहि सुरति अरु सुरताता कछु मानि
सूक्ष्म सीख उराहनो मुग्धा दस विधि जाति ।१३३

त्रिय जोवन आरूढ़ प्रगट काम प्रगलभ वचन
सुरत विचित्रन गूढ सुरतवती सुरतांति वति ।१३४

मानस मैं सो धीरि अरु अधीर धीरा धीरि
अरु उराहनौ भेद दस मध्या गुन गंभीरि । १३५

लब्बा पतिवर वाम रति कौविद वस वल्लभा
सविभ्रमा दस अरु नाम सुरतादिक अरु हाव ।१३६

मुग्धा मध्य प्रौढ़यत स्वकीया तीनि सरूप
तीन्यौऊ दस दस सबैं तीस भेद अनुरूप ।१३७

इति स्वकीया के भेद भेदांतर अथ परकीया भेद

कहत परकीया भेद द्वै ऊढ़ा और अनूढ़
अनूढ़ अन व्याही तरुनि, ऊढ़ागूढ़ अगूढ़ ।१३८

उप पति रति ऊढा गुपत, गुप्ता करति छिपाइ
चतुर विदगधा कर्मबच लछिता पर बिलखाइ ।१३९

कुलटा रति संतोष नहिं मुदिता रति आनंद
चिंतचिता संकेत हित अनुसयना दुष दंद ।१४०

सुरत वती सुरतांत्वत मानिनि प्रेमअधीन
वारह विधि कहि पर किया उपपति रति कुलहीन ।१४१

एक वैस्या जात सम सामान्या तिहि नाम
धन चाहै जिहि निधन नरकुलगुन रूप निकाम ।१४२

तीसिरु द्वादस एक क्रम तीना तैतालीस
आठ आठ विधि अवस्था त्रिसत चारि चालीस ।१४३

इति श्री महाराज कुमार श्री जैसिंह विनोद देवदत्त विरचिते मानस कायिक वाचिक भेद नाइका विशेष भेद लछन कथने तृतीय विनोद :

अथ सुकीयादिवाचिक भेद दैवीकन्या यथा :

काल्हिही सुन्दर सी फल द्वै उमगैंगे इहां दुतिदूनी उवैंगी
देवतिहै उरलाइवे कौं नव दूलह के चित चोंप चुवैंगी
षेलैन हौ इनसौं बलि हारी तिहारी ये हौंसनु दारी मुवैंगी
कंचन की छितिसी छतियां यह छोहरी हार बनी ये ~~भार भरी ए~~ मुकैंगी ।१४४

अथ मुग्धावय: संधि

दो० अग्यात वय ग्यात जोवना वामं
नऊढा अरु विश्रब्धा सोवेई नवमतनाम ।१४५

जानति नाहि अहे इन हैलिनु षेलत में के वमोलन तूम्यो
छाती कछू उभराती सी आवत पाइन भारी लगै कछु भूम्यो
कोइन मनि मनो उछरै सुनियो जननीमन आनंद भूम्यो
वालको ओट बुलाइ हरे हिय लाइ लई हसिनै कै मुख चूम्यो ।१४६

वय संधियथा (१)

बैठी वृषभान क्वोरि षेलति ही पौर द्वार
आए नंद क्वार कर गहे फूल दौना है
केई वेई दूनौ देव सूनोव्रज हेरि चष
चूनो सो चुनति दूनो हित हौना है
चंचल अचल रही अंचल रदन दावि
चंचल न अंचल द्रगचल चलौना है
टौना सो करत द्रग कोन दुहूं ओर सूल्यो
तषिलौना उत भूल्यो नाषि लौना है ।१४७

द्वार की पौर तें दौरति दूरि दुराय भुजानि दुरै दुरि वैठें
भूलि कै वातन ही हहराय हंसे वहराय लरै लुरि बैठें
देव कहा कहौ देषत ही वनै ढौरी लगाइ ढरैढरि बैठें
षोरि म षेलत षोरि सी लागति भौहैं मुरौरैं मुरै मुरि वैठें ।१४८

नव जीवना

लोग जो लाड लडावत है तिन लोगनि भौहनि माउ अमैठ्यो
त्यौं सतरै अखियान में ह्वै सखियानहु दंत दै ओठनि ऐंठ्यो
बंधुन की वतियान में ह्वैकविदेव कछू छतिया उरु पैठ्यो
पाहन को चित चाइनको वलु लैलितु लोग अथाइन बैठ्यो । १४६

नवल अनंगा (३)

जेठी बहुनि में बैठीवहू उत पीठि दिएं पिय डीठि सकोचन
दर्पन की मुदरी द्रग दै पिय को प्रति बिम्बलखै दुख मोचन

सो पर छांह निहारत नाह चढी चित चाह गडी गुर सौचन
देव सु भौंहन मैं उपजाइ भजाइलै जाइ लजाइकै लौचन ।१५०

सलज्जरति (४)

दूलह संग नई दुलही जु हिए उलही सुलही सुख सा है
देव लगाह्यि कै हि लगा भुष माउत रारिन छौंडति बा है
भौह उचै अंखियां सकुचै सुष कौ समुचो न मुचोचितचा है
सांसन मैं सिसकी रिस की धुनि हारति नाहिं निहारति ना है ।१५१

मुग्घा सुरति (५)

वैरिन मैरी कहा गई वै कर छौडि उहै किन देखन तूं दै
यौं कहि कै उभकी पर भूकतें पूरि रही दृग वारि की बूंदै
जौरन दैत नही मुष सौ मुष छौर नु दैत न नीवी की फूंदै
दैव सकौचनि सौचनि सौ मृगलौचनि लाल कै लौचन मूंदै ।१५२

मुग्धा सुरतांत (६)

धरै मुख पै मुख अंक पै अंग परै परजंक मैं बालम बाल
उसास लै ऊंची कियौ छल छैल सरा ही त्रिया कोऊ रूप रसाल
वधूसिर लौटिलिए भरि नैन करौटन लैन दियौ ततकाल
वेई कुच कंचन सैल भये वही दैव नदी भई मौती की माल ।१५४

मुग्धा की शिक्षा (७)

दोऊ कर दाबि गोरे गोल कपोल कोरे करति निहोरै पी को अभिलाषुरी
मैरी चंद मुषी तैरी चूमति चिवुक चैरी चितै वृज चंद रूप चषभरि चाषुरी
दैव सुषदानि सनमुष मुख करि नैकु रुचि कैर वन चारु सुवचन भाषुरी
निपट लजीली गरवीली ए रंगीली अनषीली षिन औषिन अनौषी इत
राषुरी ।

मुग्धा को उराहनो (६)

ह्याँ जु कछू करतूति तिहारी निहारन हारी हसै रस पागी
नै को सवार अवार भए सब षोलि किवार हसैगी अभागी
देवजु सोवनु देहु घरीक सरीकिनि वैजुषरी निसजागी
देषति हौ दुषिया दुरि द्वार ह्वै है ब्रजनी दौरि दरीचिन लागी ।१५६

इति दस विधि मुग्ध - अथ मध्या भेद तत्र दो अरुढ जोवना (१)

असन वरन महा कोमल करचरन तरुन
सुरंग अंग अंगअमलनि को
साँझ को सरद ससि अंवर मैं अध खुल्यो
वारिज तु पून्यो की प्रभा झलमलिन को
सहज सुगंध सो मदंघ मधुकर कहो
को गनै सुगंध और सौंधे समलनि को
जोतिन को जूह देव दीपति दुरुह देषो
हँसत समूह जाल फूले कमलनि को ।१५७

प्रगट काम (२)

लालचलि देषिवे को लालच लग्योई देव
लोचननि लागी लोक लाज लहराति है
दौरे द्वार देहरी अटानि घर काज मिसु
घरिया सी घरन घरीकु ठहराति है
रति को सकोच रतिया हू न मिलन देतु
छोह मूरछा सी छतिया मैं छहराति है
सेज पै सुजान सो नहीन न करति मन
माह तो भुजान भरिवे को मेहराति है ।१५८

प्रगल्भ वचना (३)

सुनि है उपहासिनी हैं जनी वै पग पैजनी वैरिनि रागती है
न छुवो कछु अंग छिमा करो छैल सकोच की गैल स भागती हैं

घुघुट्ट न घरावसी मौन धरैं बिछियान की जीभौ न लागती हैं
विनती सुनौ देव जू वालौं हरी दुखिया वै इहा हरि जागती हैं ।१५६

विचित्र सुरता (४)

ओट पट घूंघट तै हंसनि मसाल लिए निकसी रसाल भूमि भाल तानित्रिकुटी
तालधारी नूपुर अनूप रव वौलै ताल रसना रसाल चुरी चाल चारु चिकुटी
मंजरि उदार सुर सार मंजु ससकनि कंठ धुनि डंज नंदी वरनुकै सृकुटी
सुरतनवीन सुवचन निर षन लागी अषियान चन लागी भृकुटी ।१६०

मध्या सुरत (५)

लंकु गच्छिलीनी परजंक में भयंक मुखी
सुंदरि संसक अंक अंकनि धरति सी
ओठनि अमैठति कटीली भौंह ऐठति मरोरति
सुनासा तन तोरति ऋसति सी
सौंहैं सतराति इतराति बतराति औ
मुलाति अकुलाति उरु अंतर वसति सी
आंसू दृग दोलत उसास हिय षोलत
सुवोलति रिसाति सी कपोलन हंसति सी ।१६१

मुग्धा सुरतांत (६)

सेज तैं धरनि पर पाय की धरनि रद रेखै अधरनि सुधेर निसुर हुरीलेत
लूटि सी कटति कल हंस जुग देव कहै टूटि मुतिसरी छिति ढुरु हुरी लैत
वार हार वसननि हारन न पावै मोर मौरनचकोरन भार भुरु हुरी लैत
नैन निज टेरि टेरि चेरिन कौ फीकौ मुष पीकौ मुष हेरि फेरि फुर हुरी लैत।१६२

अथ मध्यामान (७)

वक्रोकति यति सौ कहै मध्या धीरा नारि
मध्य मध्य उराहनौ वचन अधीरा गारि ।१६३

धीरा यथा (८)

हित की हितू री क्यौं न तूरी समुझावै आनि सुष दृष मुष सुषदानि को निहारनौ
लपनै कहां लौ बाल पनै की विकल बातैं अपनै जनहि सुपनै हू न विसार नौ
देव जू दरस विनु तरसि मर्यो हौ पग परसि जियैगौ मनु वैरी अन मारनौ
प्रतिव्रत व्रती ए उपास प्यासी अंखियनि प्रात उठि प्रतिम पियायौ रूप पारनौ ।१६४

मध्या धीरा (६)

मोरहिं आए मया करि मोधर बैठियै दर्पन देति मंगाएं
ओठनि अंजन लीक लसै अति देव दुहूं पल पीक लगाएं
आनन मैं अगरे वगरे गुल वाल गरैं रंग रैनि रमाएं ।१६५
कोइन लोइन लाल लषै जिन्हैं कोइन लोइन ल्याय लगाएं ।

मध्या धीरा धीरा (१०)

तन मन ओट पट कपट घूंघट खोलि उरसौं लगाएंहतनै पै अरसात हौ
थाकी अपन्याइ अपनै से हौ उपाय करि भए अपनै न सुपनै हूं न थिरात हौ
कोधौं किहि गैल छैल छुतियां छपाई जाके विरह वौरा नै देव बोलत नवात हौं
प्यारे परजंक हू मैं भौ मुष मयंक हू मैं सांसे लै ससंक अंक हमैं अलसात हौ ।१६६

इति दस विधि मध्या- अथ प्रौढ़ा लब्धा ` यथा `

देव सुष सदन विराजत वदन तामैं षेलत, मदन फागु राच्या रति राग रंग
वार वधू वैसरि नचावै तरिवन नटति लंक तमास गरि भाल भ्रू विभाग रंग
भृकुटी सलिल चारु चितवनि सील भरी मानौ सहचरी छरी ली है अनुराग रंग
अधर सदन दुति वसन अमंद मंद सुंदरी हसनि सनि रही है सुहाग रंग । १६७

रति कोविदा (२)

सांसै लैति हंसति रिसाति मृदु बोलति
बलैयां लैत लाज उर आनि परि गई है
घूंघट उघारि मुष देषन देति रद
रैषनि कनैषनि की कानि परिगई है

देव सुषदानि सुष दाइनि कौ संग देषि

सौति दुष दाइनि कै हानि परि गई है

तानि पट दोऊ दुहूं पानि पर वीनि रूप

पानिय निहारिबे की बानि परि गई है ।१६८

वस बल्लमा (३)

पीछे पीछे डोलत हैं सामुहे ह्वै वोलति है

षोलत हैं घूंघुट सुप्राननि पुषौत है

पग पग मैं विछाइप्रेम पांउड़े से

धोष हून भूले देषा देषी मैं घुषौत है

देव सषियान की सिराइ अखियान सब

नि सुकुनि देषि अनदेषिनि दुषौत है

इंदु वदनी के सरदिंदु से वदन,स्याम

विंदनि गुविंद अरविंदनि सुषौत है । १६६

सविभ्रम यथा (४)

पिय के जिय जी करति प्रीति उपजी करति

नाहीं के नजीक रति ही मैं हुलसी करति

त्यौरी तिरछी करति नासा मौर छी करति

छाती छुवै छी करति सांसे उस सी करति

देव श्रम सी करति कर वर सी करति

यौ ही अरसी करति सौही अरसी करति

सी करति औठनिअसी करति

औषिन रिसौंही सौंह सी करति ,मौहनि हंसी करति।१७०

अथ प्रौढ़ा सूरत (५)

कवि देव बरनै बरनि पूर्यौ पर बंघरव सरस सुगंध रव रसना सच्यौ है

मृदु मानि मनितन्नि अलिगान कमलनि निरदंभ परिरंभ उर वसी हू रच्यौ है

घूंघुट वितान ओट सुघट उघट षट्ट लटकन मोती नट्ट चट्टुल नच्यो है
विधु मंडल पुलनिभानु मंडलनि मध्य तारो मंडल विलास रास मंडल रच्यो है।१७१

अथ प्रौढ़ा सुरतांत (६)

तीनि तट तटिनी निकट वन राजी नंद विकट तरंग सुर गंधुर वाए हैं
अवर फफकत उफकत विविचन्द्र चूड उड्गन फुंड मुंड छवि सौंछवाए हैं
विंव फूल फरकि दरकि दल दाखो सुषंजन ममर मन रंजन सवाए हैं
कवि गुर वुध भौम मंद हलिचाइ जौन देव रविसोमतम तोमनि दवाए हैं। १७२

प्रौढ़ा धीरा मथा (७)

दूरि ही के आदर उदारि द्रग वादर सौ उमड्यौ उरोज गिरि वौरिवे कौ
साधी अघ उरघ उसासनि की आधी सौ गिरा ही गहि बाधी कौप कपट कपाट घर
भृकुटी कुटिल नटी नटिनटिन टी हटी मंद विहसनि रटी वलैन कमल कर
साचे हू अचल चल्यौ हल्यौ हल्यौन इतै पर अधरन की धर निघसौष रिज घरनिधर। १७३

अधीरा प्रौढ़ा (८)

षौरि षौरि राष्यौ जौरि रसु राष्यौ सौ निचौरि चौरि चाष्यौ मधु माष्यौ सषियन कौ
सौषै मुष भूषनि सराषै रूप रूषनि क्यौं नौषै तनु पैषि मन पौषै पषियनकौ
निपट कपट प्रेम लपटि लपट जीभ उच्चरति चाटु सौ उचाट सषिमंन कौ
देव सुषमानि सुषदानि मुष देषै दुख मानिवौ अमानु दुषिमान अंखियान कौ।१७४

प्रौढ़ा धीरा धीरा (९)

चाचरि नाचे निसाचर के गृह सोई तिहारे सनेह सनैगी
लोहनु के रंगु लाल गुलाल लषे रुष कैसरि सी उफनैगी
पूसहिंते हरि फागु करीतिय ऐसी न जौं हिय माह गनैगी
लागी लला नवला सी हिए सुले चाए तुम्हें गुल चाए बनैगी। १७५

इति श्रृंगार पात्र सुद्ध सुकीया के तीस भेद - सुकीया को स्वरूप

डोलति हरैं मृदु बोलति षरैंनि द्रग षिरकी कपाट खोलति [redacted]त्रसति है
सकुच सुभाइ पति पूजन उपाइ क्यौं हूं छूटत न पाइ कहूं घाइनि घसति है
आपु रपनु करि दरपन ह्वै रही सुघर पनु करि दैव काहि तूं हंसति है
रूप गुन जोवन चटीयों चरननि याकी देह मोहरे मैं हरि मूरति वसति है। १७६

सहज स्वरूप

जरीपट घूंघुट वितान वंदी तोरन चंदोवा
सीस फूल सीस कैलसत उदीय है
मांग की सुहाग पौंरि आसनु जराऊ खौरि
तरिवन दैव दोऊ सैवक समीप है
भौंह तट नील लाज सागर सलिल सील
लोचन कमल नासा मुकतन सिंपि है
सफरी हंसनि पर डारी डारी गुन डोरी
राजै रोरी को तिलक मुष मंडल महीप हैं। १७७

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री जैसिंहविनोद दैवदत्त विरचितै मुष्य श्रृंगार पात्र सुकीया भेद भैदान्तर वर्ननो नाम चतुर्थ विनोद: - सुकीया की दसादिक भैदान्तर -

सुकीया की दसादिक भैदांतर

दसा अवस्था हाव दस यदपि सकल त्रियानि
तदपि सुकवि क्रमतै कहत मुगधा मध्य प्रौढ़ानि। १७८

मुगधा त्रिया की दस दसा कही पूर्व अनुराग
दसावस्था मध्यान की वरनतु सुनौ सभाग। १७६

स्वाधीना वासक वती उत्का षंडित वार
कल हंतरि विप्रालवध गत पति कृत अभिसार। १८०

आठ अवस्था ए सुकवि वरनत मत प्राचीन
वासक सज्जा रोज कों साजैवार प्रवीन । १८१

पिय आगम बीतत समै उत कंठित चितचति
षडित वारसु षंडिता प्रातहि आवत मति ।१८२

कलहंतरिता कलह करि प्रतिसौं फिरि पछिताइ
विप्रलब्ध तिहि नामि लै पिय संकेत बताइ । १८३

अभिसार प्रिय गृहचलै समय समान सरूप
प्रोषित तिय परदेस पति दै गयो अवधि अनूप ।१८४

अथ स्वाधीन पतिका (१)

लौचन लचाइ लैचि लाजनि चलति त्योंहीं लाल लचे जात चित लागी ललचाई है
देव द्रग दोऊ भौंर हौंसनि हियोभरि भुजानिभरि भाग अनुराग भरि लई है
सौंहैं सुषदानितो सुषद मुष दैषिपल अघन अघात दिष साधनित भई है
घनि धनि रूप गुन साधनि अनूप घन या ग्रह धनी कों निधनी का घनु भई है ।१८५

वासक सज्जा (२)

खोलिकैं कपाट दीने अंतर कपाट रंग रावटी में औट ह्वै सुगंध सुवट ही
पोंछति कपोलनि अगोछति उरोजनि तिलोछति सुदेस केस चांवा चुवटति है
केली सुष संग की उमगनि अकेली देव दिवसु गमावै अंग अंग उबटति है
मैहदी रचाइ कर पाइन महाउर दै देषति कै नैषनि सषीन षटवति है ।१८६

उत्का यथा (३)

सेज कों साज सवैं सजि सुंदरि बैठी समागम पी को सुनैया
वीतो समै अवहीं तो भयो हरि भीतो कहं चित चीतोचुनैया
सवसु दैउंगी देव सो जो कोइ आइ संदेसो कहैं निपुनैया
जालनि जालनियौं कहै वाल परी नवजाल ज्यौं लाल मुनैया ।१८७

षंडिता (४)

लाल लाल लोइन भलोइन दरसु दीनो
कोइन छिपावै लगी कोइन कलोलती
सैव किनी हमारी करावै सैवकिनि जानि
दैव किनि निकसि कृपा कै नेक बोलती
राग रंग मगी अनुराग जगमगी संग
जगी सब रैनि डग मगी डग डोलती
ललकै छलक पट छलक भलक पट
वल कै पलक पट मूंदि मूंदि षोलती ।१८८

कलहंतरिता (५)

प्रान प्यारे पति को करति अपमान देव जानत न प्रान अब प्रानतन षोत क्यों
रीगिज्यों सवात वात कहत समारत न इत उत पात उतपातक की ओत क्यों
कोसतु है आपु अपसोस करै आपु हरि रोस करि तब तो रिसाति अबराति क्यों
पूछै किन कोई इन्हैं पीछे पछिताति कहा सूरकृत ऐसे कित मूरकृत होत क्यों।१८९

विप्रलब्धा (६)

सुषदै वुलई वनु सून्यो दुष छून्यो दिषाए कै वार उसिसि रोस स्वास सरकनि
औचक उचकि चित चकित चितोत चहूं मुकुत हरानि थहरानि कुच थरकनि
रूप भरे भौरे वे अनूप अनियारे द्रग कोरनि डारे बूंद ढरकनि
दैव अरुनई अरुनई रिस कैछिवि सुधाम घुर अधर सुधाम घुर फरकनि ।१९०

अभिसारिका (७)

भारी निसि भैरो किलकारी दैत दिस दिस
कारी घटा धिधि धिधि लागती न जीक सी
गनीनि घनी के ध्यान वनी जोवनी पैस्यान
घनी बनी वेलिनु पगनि अब नीक सी

झिल्लिनु की झैल गैल गैलनि चुरैल गन
मोकुल सुरनि कैकी कोकिल की कीक सी
देव मूंदि कानन कानन आन न सुनै
आनन उजारे सों लिषति आई लीक सी ।१६१

दिवाभिसारिका (८)

चंड कर मंडल ते ग्रीषम प्रचंड घामु
घुमड्यो फिरति भूमि मंडल अषंड धार
भौनते वगीचा देव लहलही डारनि ह्वै
दुलही सिधारी उलही ज्यौंलह लहीडार
नूतन महल नूत पल्लवनि ह्वै ह्वै
स्वैदलवनि सुषावत पवन सार
तन कंतन कमनि कनक नूपर पाइ
आइ गई झनक मनकनि झनक वार ।१६३

प्रोषित पतिका (६)

पावस प्रथम पिय आवै की अवधि सो जो आवै तो बौलाऊं अति आदरनि
नाहिं तौ न कवि हों न देरीं वीच सुषे सर ग्रीषम हीं भाशु षाली राष षल षादरनि
वीजुरी वरजि कहु मेहै न गरजु इन गाजु मारे मोर मुष मोरि री निरादरनि
कंठ कोकि कोकिल निचुंच नोचि चातिकनि दूरि करु दादुर विदा करिरी वादरनि।१६३

प्रवत्स्यत्पतिका (क)

फूल से दुकूलनि मैं देह की दमक देव कासार करंग सार कैसरि कनक सी
जीव की न आस कहाँ कैसी भूष प्यास आंसू सूखत उसास वैनी आनन अनकसी
सोई दुष दूषि विथा विरह विरयि सूखि मंजरी सी मंजितन ह्वै गई तनक सी
प्रात परदेस कौं चलैगें सुषदायिक सुभाइ काहूं आइ कही भाइक मनक सी । १६४

आगभिष्य पतिका (ख)

धाई खोरि खोरिते बधाई पिय आगम की कोरि कोरि भांति रस भावनि भरति है
मोरि मोरि वदन निहारति विहार भूमि घोरि घोरि आनंद घरीसी उघरति है
देव कर जोरि जोरि वंदत सुरनि लोगनि के लोटि लोरि पाइन परति है
तोरि तोरि माल पूरै मोतिन की चौकै निछावरि को छोरि छोरि भूषन घरति है।१९५

आगम पतिका (ग)

औधि के घोस अचानक आए पै आउ ज्यौं आवत ही निहरानी
देव दोऊ मुज लै अंखियां भरि राषी हियो भरि कै तियरानी
स्यामधन आगम ज्यौं वसुधा हरषी वरषी परषी बियरानी
छीजी सी भीजी रंगी उमंगी सी तपी औ कंपी ससकी सियरानी ।१९६

प्रीतम चले सुनि चली न फिरि सांस आगे आंसू चलि आए तो छिपाए छलछंद ही
सिसकी भरति रही मिस कीन वात विस की सी वैलि वाढी उतपति हिय कद ही
देवलषि लौटि पगु दीनो पिय आइवे को त्रास ही की स्वास मैं हुलास ह्वै अनंद ही
निघट्यो न दुष उघर्यो न सुष घूंघट मैं ससक्यो सकान्यो मुख मंद ही । १९७

इति मध्या की दसावस्था - अथ प्रौढ़ा के दस हाव

दो० लीला और विलास कहि औ विछित्ति विलोक
विभ्रम किल किंचित कहौ मोट्टाइत विव्वोक ।१९८

कहौ कुट्टमित औ विहृत ललित ललित दस हाव
तिप को पिय संयोग मैं प्रगट चैष्टा भाव । १९९

क्रम ते लच्छन दोहा

कपट वेषभाषा नु करि लीला मैं रस हांस
सरस भावतन मन वचन रुचिको रचन विलास ।२००

लघु मंडन विछित्ति मैं मन अभिमान विसेष
विभ्रम सो जु प्रमोदते उलटे भूषन वेष ।२०१

किल किंचित हकवार भय मुद मदरस रिस मान
मिलै कपट मोट्टायित मनुवचन आननतन आन ।२०२

मन मैं सुख संकट कपट प्रगट कूटमित हाव
पिय सदोष विव्वोक वहु दृग भौंहनि के भाव ।२०३

अपनी गौं मिसिलाज छल विहित आन तन आन
ललित सरस रचना ललित वरनत सुकवि सुजानि । २०४

अथ लीला हाव

रच्यो कच मोर सु मोर पषा धरि काक पषा मुख राखि अराल
धरी मुरली अधराधर लै मुरली सुरलीन हू देव रसाल
पटंवर काछनी पीत पटा धरि वालम वेषु वनावति वाल
उरोजनि षोजनि वारिवे को उरपै ही सरोजनि की मृदु माल ।२०५

अथ विलास हाव

दैव सुवरन गुन वींध्यो है मधुर महा अधर अषारे के संघर सुषढार मैं
मंद मुसक्यानि पटु तानि पट नथ को सुनथ को निरत निरधार मैं
घूंघट वितान तानि तोर तुतर्योननितो झलकै कपोल वैंदी ललकै लिलाट मैं
मोती लटकन को नवल नट नाचे सदा नैननृ वान के चटुल चटसार मैं ।२०६

अथ विछित्त हाव

भूषन भेष जराऊ जरी धरे छोरि सुगंध तमोर विसारेई
पहिरेफिरै पियरो पट पीको सुनी को लगै मुष ही के उज्यारेई
वंदन वैनी लिलार लसै चुरी चारि सुहाग सौं रारि पसारेई
लाज लगै अरविंदन देवरची मिहंदी कर विंदनि हारेई । २०७

विभ्रम हाव

विभ्रम हाव

लाल जरी लहंगा कछी काछनी झूमक सारी कसी कर तैसी
माथे मिही दुपटा फहराति छुटी अलकैं छलकै छवि कैसी ,
छाती ऊँची विन कंचुकी अंचर सूधी रहै न अहेकि न ऐसी
देव जू वात सवै बनि आए की कापै वनै बनि आई तू जैसी। २०८

अथ किलकिंचित हाव

लागत ही पिय के हिय सौं हिय मो हिर ही त्रिय काम कलानि मैं
देव संजोग जगे उमगे उर एक ही वार सवै सुख दानि मैं
ही मैं हुलास गरे सिसकी अधराति हंसी असुवा अँखियानी मैं
स्वास मैं स्वास विलास मैं रोसु मोहनि मैं अरु भै कुल कानि मैं ।२०९

अथ मोटाइत हाव

रैनि मैं पुरैनि लौं कमल मुष मूदे रहै देव दिन कर दुति देखे दौरि दिन कौं
वाम वाह नाह के समीप उछाह भरी छाह भई डोलती न छवावैं छाहं छिनकौं
वैर किधौं प्रीति यह को जानै अनोखी रीति अनष अनीति के सुनै पैकिन किनकौं
औगननि उरझे हिए न सुरझावै कौन इनको बुझावै समुझावै कौन इनको कौं । २१०

अथ कुट्टमित भाव

कंचुकी सकोच कुच कंचित कै सोचु तीज
अरुननि बोल तीज सूधी समुहाति है
मारत भू मैं वरसा रग हैं भू मैं देव रसना
गुननि दंत दावै विहसति है
विमुषनि होति ज्यौं दुषति सुष पावति त्यौं
सनमुष मुष पै घनेई घाइ षाति है
अंग अंग पति के विपति रंग संग रमै
लोहू हेरि सूरज्यौं विसेष विरझाति है ।

विव्वोक हाव

प्रीतम मीत अमीत न सौ मिलि प्रातहि आए हैं प्रीति सुभावक
नीद न जात उनीद मैं लोइन कोइन तै निकसैं जनु जावक
कौपतई चितई पिय त्यौं तिय नैन नचाइ नचाइ ज्यौं पावक
देव मनोज मनोजु चलायौ चितौन मैं सौन सरोज मैं चावक ।२१२

विहृत हाव

देषि सषीन न षैनि भयौ मुष देव गुपाल गए अनुरागे
त्यौं उत घूंघुट झीन पटा मैं झुके उझके द्रग प्रेम सौं पागे
पंकज से कट जाइ छिपाइ रही छिपि लोचन मूंदि समागे
काम द लाल चले चितुलै नँद लाल चले मदलालच लागे ।२१३

ललित हाव

लागत समीर लंकु लहैकै समूल अंक फूलसे दुकूलनि सुगंध विथर्‌यौ परै
इंदु सौ वदन मंद हासी सुधा विंद ज्यौं मुदित मकरंदनि मुरयौ परै
ललित लिलार ~~स्रम~~ झलक अलक भार मग मैं धरत पग जावक धुर्‌यौ परै
देव मनि नूपुर पदम पद हू पर ह्वै भूपर अनूप रंग रूपनि चुर्‌यौ परै ।२१४

इति प्रौढ़ा के दस हाव इति मुष्य श्रृंगार पत्र स्वाकीया कौ पूर्वानुराग
प्रथम संग दसदसा अवस्था हाव वर्नंनं

अथ स्वकीया विषय गौन श्रृंगार मान प्रवास करनादिनि रूप न

दो० पूर्वानुराग वियोग तैं होत सिंगार संयोग
पीछै मान प्रवास अरु करुनातम दुष भोग । २१५

तातैं पूर्वानुराग रस मुष्य सिंगार संजोग
मानादिक रस गौन है क्रोध विरह अरु भोग । २१६

प्रगटहिं मान वियोग मैं रौद्र कोप प्रकास
करुन ताम रस करन मय सकरुन विरह प्रवास ।२१७

ताते मानात्मिक मलिन रौद्रकरुन परिभोग
साप हेतु पंचम विरह सो प्रवास के योग ।२१८

अथ मान वियोग श्रंगार

गुंजि गुंजि उठ्यो घनी वरुनी निकुंज रहि
गंजि काय कुंज रहि विरचि विहार मैं
देवको कोपु कैसरी कुभेस रीति तैठ्यो अैठि
भृकुटी अमैठि पूछि त्रिकुटी पहार मैं
थीते चित्त चीते सव ग्रह षगहीते, उठि
उठि लोम वीने रीते ससक हुंकार मैं
मारे दृग घाइल घुमारे कर साइल
हमारे जान मान महाराज की सिकार मैं ।२१९

मान अंसु धीरादिकनि तहां न छूटति प्रेम
सुद्ध मान विन प्रेम रस है कुदान को हेम ।२२०

प्रवास वियोग श्रृंगार

जीवन नाथ कहा इन क्यों जन जीवत संगु पयानो करेंगो
ताविनु जीव जो चाहै जियो तौ जियो किन मोहू भले विसरेंगो
औधि गए कहिकै दिन एकुह हां छिनु एक नपार परेंगो
देव महा दुषिया अखियान के दुष न मोपर देख्यो परेंगो ।२२१

करुणात्मक वियोग

नष सिष भेंट भई एकै तनु ताहि तजि
चाहत गयो मजिकै नागु निर मोक लौं
नीके सुख जीके सुखदाइक सुषद मुष
सनुमुष देखौ देव आनंद के ओक लौं

एक बार नेक किन कहिवे कौ भाषी बैन
राषी पैन मोहि सहिवे कौ इह सोकलौ
मेरे प्रान नाथ मेरे प्रान साथ रहै न
तौ जानत अकेले जान पैहौ परलोक लौं

अथ मानवियोग भेद

लघु मध्यम गुरु मान अरु दुषित अन्य संभोग
ज्येष्ठा कनिष्ठा वक्र वच गर्वित सुजथा जोग ।२२३

अथ लघुमध्यम गुरु मानक वित्त

सौति चितौनि चितै दुचितै पिय रूठि रही जु हंसे हंसि बोली
घोषक ढ़ीतिहि बानी सुनै सतरानी सु सौहनि कै रिस छोली
ता संग सोइकै आए प्रभात प्रभातकि पाइं परे हूंन डोली
कैतु कुटी भ्रकुटी चिकुटी नभ माल घुजाज्यौ अकाल कलोली ।२२४

अथ गुरु मान

मनही मसूसि मन भावते सौं रूसि सषी दासिन सौं दूसि रही रंभा झुकि झंझासी
आरसी महल चित्र सारी सी चहल विनु आनंद टहल दैव मंद विधि वंझासी
सोचै सुष मोचै सुक सारिका वेचारे चंचु रोचै न रुचिर वानि मानि रही अंझासी
संग के सकल अंग अचल उछाह भंग औजनि न सूझति सरोज वन संझासी ।२२५

अन्य संभाग दुखिता

सूंघन चमेली चलिको मलै कलीनु अलि कोमलै पवन उपवन ल्यायोलुरिकै
अरुन बरन अंग तरुन सुरंग देषि कामक कुढंग संग टक्यो ढंग हरि कै
पायो परिमलन मलन कियो सवनि सिसलिन के संग ही मलिन भई मुरिकै
जान्यो न सुगंध वाम दंध मधु करनी चवीच ही बिदारी ~~[illegible]~~ कली दुरिकै।
२२६

ज्येष्ठा कनिष्ठा यथा

खेलत आंख मिहीचिनी षेलु सु आयुही दाई भई सुष दाई,
एकसी प्रीति प्रतीति दुहूं पर देवजू भूपर रीति चलाई
मूढ़ करी छल ही छल छैल सु ढूंढन गैलनि गूढ़ पठाई
सर्वसु दै दृग को लयु दै इत नैनि त्रिया छतिया सौलगाई ।२२७

वक्रोक्ति गर्विता

वैली नवेली अलीतजि केली अकेली चमेली हियो दरि है गो
सर्वसु जोवन को हरि है गो सोई सर्वसु जोवन को हरि है गो
होन दे सांझ सरोवर मांझ सुदाउं कुमोदनि को परि है गो
देव अभै अरविंद मुदै करि पून्यो को इंदु उदै करि है गो ।२२८

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री जैबसिंह विनोद देवदत्त विरचिते गौन श्रृंगार पात्र सुकीया भेद भेदांतरे पंचम विनोद:

अथ परकीया ऊढा यथा

या जिय को दुख कासो कहौं कहिवे को सुजीभ न डोलति डाही
कौलों छिपाइए छाती के घाइन होत चवाइनि की चित चांही
मैरीयै गैल लग्यो रहै लंगर जो नलषो तो मरो पल ताही
लाजनिवाहन मोहियरी यह वैरिनि लाज परैन निबाही ।२२९

ऊढ़ा को उराहनो

रावरे रूप लला ललचानी पै जानी न काहूं विकानियों ऐसी
है सत हींन सताई न तौ तुम संगति ते उतरी उत तैसी
न्याउनि वैरो न हौ यह नेह को देव दुरीन तुमे हमैं जैसी
देषिवे ही को भरे सिसकी तिनके रिस की चरचा कहो कैसी ।२३०

अथ प्रेमाधीन ऊढ़ा

घेरी घिरी घर मैं नघरी कुसु कुंजनि मैं कहि काहि गिनैरी
ठाढ़ी अकेली सहेली पढाइकै पाइ अंगूठा सों भूमि षनैरी
ल्याउ उन्है गहिवाइ इहां लगि तौ लौ घनी तरु छांह तनैरी
आस तौ या वन वा वन माली मिलै विनु आली न मोहि वनैरी।२३१

अथ अनूढ़ा

मौतिन झालरि झमकति झूमक सारी इंदि इंदिरा मंदर देव दुति कंदरपसी
जगमगी जोतिन कै जराऊ तरिवन तीर अलक अराल मति लपटी सरपसी
तारिका वलय वीच तारापति कै नजीक तरनि तिमिर तरै तरप तरप सी
आली अंग औझल कै उझकी झरोषाँ मृग सावक द्रगनि काम पावक झरपसी।२३२

जोवन भूषन रुप गुन सील विभौकुल नैम
आठ अंग नाइका अरु कहिए पूरन प्रेम ।२३३

इन अंगनि स्वकीया कहौं परकीया कुलहीन
विभौ सील कुल नैम विनु वैस्या लोभ प्रवीन।२३४

तातैं स्वकिया सुद्ध रस परकीया रस प्रेम
गुप्तादिक षट भेद तिहिं तहां न रसको नेम ।२३५

परकीया कै गुप्तादिक षट भेद

गुप्ता विदगधालक्षिता कुलटा मुदिता जानि
अनुस्याना षट भेद परकीया रस हानि ।२३६

ऊढ़ापतिरत कर्मवच मनसा उपपति लीन
कन्या प्रौढ़ सु अनूढा गुर बंधुनि आधीन।२३७

गुप्त रहै उप पतिहि मिलि छलि विदग्घ वचकर्म
लक्षित लक्षन लक्षिता कुलटा उलटै घर्म ।२३७

मुदित मुदित उपति मिलन मिलि मिलि पछिताइ
अनुसयना षट भेद ए है गुप्तादि सुभाइ ।२३८

षद भेद यथा

छिपी रति छैल वाकु छलनि छिपावै औल कुलत्रिय गैल छिपि उछरति है
आठौ जाम वाम काम केलिछिन अघाति देव रातिनि पराति अति आनंद करति है
फागु गएं फीकी चितै चितु जीकी फूल माल हरि ही की देषि दूती सौंलरति है
मानौ मिसकी न कोई न जानौ मिसकीन घात रिस की चलाइ वात सिसकी भरति है। २३६

इति परकीया भेद भेदांतर अथ सामान्या

सामान्या

आजु मिलैं बहुत दिन भावते भटति भैंटै कछु मुष भाषौ
ए भुज भूषन भौ भुज वाधि भुजा भरि ओंठ अंचै चषचाषौ
लीजिए मोहि उठाइ जरी पटु कीजिये जू जिय जो अभिलाषौ
प्यारे हमैं तुम्हैं अंतरि पारति हार उतारि इतै धरि राषौ ।२४०

एकै सुष सव त्रियन मैं पैर सु प्रेम विवेक
पानी पैनी धार मैं षग्ग सव एक ।२४१

मुग्धादिक क्रम स्वकीया वान ५ वेद ४ अरु वेद ४
द्वै परकीया २ वस्या एक १ सोरहो भेद ।२४२

एक एक वसु अवस्था आठवीसि सौ एक
ते उत्तम मधि अधम त्रिसत चौरासी सुविवेक ।२४३

सत्व गुनवती उत्तमा अधमा तामस रूप
रजोगुन वती मध्यमा त्रिगुन सुभाइ अनूप ।२४४

तीनौ कौ उदाहरन

एकै असाधु विना अपराध रहै पल आध जु दीन लरैतैं
और कछू भली रूसै न तूसै जे जैसे कौ तैसी सुभाइ ढरै तैं
राधे कौ साध अगाध हियौ कछु वैन कुवै अपराध करैतैं
ज्यौं अरविंद के पातन पै ठहरात न वारि के वुंद परैतैं ।२४५

इति नाइका मुष्य गौन रसवती प्राचीन मततीन सै चौरासी भेद नवीन
मत तीन सै चरवालीस - अथ नाइक

अथ नाइक

सुद्ध ध्रष्ट अरु चतुर पति गुप्त सु प्रगट अनिष्ट
क्रमतैं नायक चारि अनकूल दछा सठ ध्रष्ठ । २४६

एक नारि अनकूलव्रत सकल त्रियन संग दछा
सठ झूठी अनुकूलता लंपट ध्रष्ट समछा ।२४७

अनुकूल

और की चाहत चाहत है चित वाहित माह उमाह मए हैं
देव दोउ गलवाहन केवल प्रेम नदी अवगाहन ए है
और की छांह न छावत छांह वही छवि हीके उछाह तए हैं
प्यारी के ऊपर छांह करैं पिय पीछे फिरैं पर छांह भए हैं ।२४८

दछिन

एक कौतौं एक से अनेकनि अनेक जिय नैक भांति एक हू
अनेक कहू न रिझावै अंकभरि कौ
जौई गहिरौ कै सौ विलोकै अपनौई रूप रती अनरूप
कै निरूपै रूप धरि कौ

हंसते हंसत रूसे रूसित फुके फुकत सनमुष रहै न
विमुष होत घेरि को
हाथ हाथ सुंदरि सकल साथ साथ डोलैं, आरसी
सो निरमल निहारयो हियो हरि को । २४६

सठ

सॉंफ ही सुनाई काहू आई तु सुहाग बाग
वाढ्यो अनुराग सुनै सूघाई सुभाव तो
फूली उतवेली न वेली ह्वै चवेली आदि
चितै चहूं चंदिका सरद ससि भावतो
पून्यो की जुन्हाई मैं जुन्हाई सी मिली तूं
जानि मूढ भयो ढूंढत अंकेलो होन पावतो
न्यान रहि जातो प्रान पौन कढ़ि जातो ' देव '
कौन हाल होत इहो मौन जौन आवतो ।२५०

ध्रष्ट

एकनि को अनुकूलसु न्योपति दूसरी नारिनि हारिनि वारन
औरनि को सुम लदान दक्षन एक सी प्रीति प्रतीति सुधारन
आवत साधु भयो हठ कै सठ फूठिये सोहनि हाथ पसारन
जानि हमै अव लाज निढिढि अनीठ लगे अब लाजनि मारत ।२५१

इति नायक अथ नाइक सषा नर्म सचिव पठि मर्द चिट चेट विदूष कै नायक
सषा हित चित चतुर सहेट वहु विलाश अरु हास क्रम ।२५२

चारौ को उदाहरन

हौ इत की हित की कहि हौ जित की तित की चितकी सब जानौ
त्यौं उतकी अति आतुरता लषि वातन चातुर ताई की आनौ
हौत भट् विट चैट चवाई विदूषक औन हँसी रस ठानो
एक अनुराग सुहाग गुमाननि मानि नि मेरी कह्यो किन मानो ।२५३

हित नाइका के सषी नायक कै दूती सु
देषति सुष संपति समै दुहुनिल चावति सीसु ।२५४

सषी

सत्यवती युवतीनि को सर्वसु परवसु पूरन पुन्य विहारो
दूसरो देव कुलत्रिय को रचि देव विरंचि वृथा पचि हारो
जीवनि भूरि सो जोवन को गुन रूप को गर्व अनूपनि हारो
नेक जो पीतम को अनुराग सु भाग सषी को सुहाग तिहारो ।२५५

यह सषी की मुगधा सौंसिदा जानी
अथ दूती यथा

बैठी क होउठि देषो भटूरंग मौन तुम्हैं बिनु लागत सून्यो
चातिक लौ ररि देव तुम्हैं सुचकोर भयो चिनगी कौ चून्यो
सांझ सुहाग की मांझ उदै करि सौति सरोजनि को मन लून्यो
पाउस तैं उठि कीजियै चैत अमावस तै उठि कीजिए पून्यो ।२५६

इति श्री मन्महाराज कुमार श्री जैकसिंह विनोद देवदत्त विरचितै परकीया भेद नायक सषा दूती निरूपनो नाम षष्टम विनोद:

अथ हास्य रसादिक रस वर्णन दोहा

चित थापित थिर वीज विधि होत अंकुरित भाव
चितु वदलि दल फूल फल नव रसनु सरस सुभाव ।२५७

रस सिंगार हास्य अरु करुणा रौद्र वीर भयानक कहियै
वीभत्सो अद्भुत अरु सांत काव्य मते एनव रस लहियै
नाटक मत आठै विन सांत सम-समै भावनि तै निकसैं
भावनि सहित काव्य नाटक मैं कवि मुष, नट चेष्टा मैं विकसैं ।२५८

छप्पैय

छिन छिन नाना रूप रसनि संचारी उमकै
पूरन रस संजाग विरह रस रग समुमकै ।२५६

रस अंकुर थाई विभाव रस कै उपजावन
रस अनुभव अनुभाव सात्विकौ रस झलकावन ।२६०

ए होत नायकादिकनि मैं रत्यादिक रस भाव षट
उपजावत श्रृंगारादि रस कवि गावत नाचत सुकविनट ।२६१

नव रस स्थाई भाव

रति हांसी अरु सौक रिस अरु उछाह भयजान
जुग पसारि विस्मय साँत ये नव थिति भाव वषान ।२६२

रति चढ़ि होय सिंगार रस हांसी बढ़िकै हास
करुना सौक चढ़ि रौद्र रस रिस बढ़ि करै प्रकास ।२६३

बढ़ि उछाहतैं वीर रस वढ़ै भयानक भीति
घिन बढ़ि कै वीभत्स बढ़ि विस्मय अद्भुत रीति ।२६४

शांति सु वाढ़ै शंत रसु मिलि विभाव अनुभाव
सात्विक संचारनि लै झलकत नवौ सुभाव ।२६५

जिन जिन तै जौ रसु बढ़ै प्रगटै जिन जिनहि प्रभाव
तै तैतिह तिह रस विषै है विभाव-अनुभाव ।२६६

इति श्रृंगारादि भाव अथ हास्य रस कथन दौहा

भाषा भूषन भेष जिह उलटेई करि मूल
हँसी सु उत्तम मध्य अघ त्रिविधि हास्य कौ मूल ।२६७

यथा

पल पीकि के लकि लला के लषी अबला विलषी बह राइ हंसी
कर सैन करी समुझै न तऊ दुहं नैन उठी लहराइ हंसी
सषियां अषियानि न चाइ अचैगई औठनि ही ठहराइ हंसी
कवि दैव चितौनिहिं सौति परोसिनि षोलि हियो हहराय हंसी ।२६८

अथ करुनारस

विनठे इंठ अनीठ सुनि मन मैं उपजत सोग
तिह आसा छूटे विषम करुन वषानत लोग ।२६९

जूझि पर्यो रन रावन वीर सु सूझि पर्यो पर लौ नगरी को
जानु की आनि मिली रघुनाथ को भागु सराहि सुहाग घरी को
लंक सुरी असुरी उलै लंकतै आई ससंक सु युद्ध थरी को
सीता भई सुष मैं दुष षानि लषैं बिलष्यो मुष मुंदु दरी को ।२७०

अथ रौद्र रस

विधि असाधु अपराध करि उपजावत जिय क्रोध
होत काम बढ़ि रौद्र रस जहां प्रवाद विरोध ।२७१

संभु सरासन टूट्यो सुन्यो विष घूंटि
मनो सुष है निघटायो
दूसरे राम को नाम सुनैतें विरोध कै
क्रोध कुचौंधत चायो
मारगो भूपन को पन को सुनि मारगो
रोकित मारगो आयो
कौनै हरी फनि की मनि सीस तै
कौनै घां सोवत सिंह जगायो ।२७२

राउ भगवंत रुष अनख बढ़ायो भुष भौंह कर धनुष चढ़ायो इकबारहीं
कोंप करि कापर धौं पकरि लीनि आजु अरि कोप करि लोप करि है सवार ही
आगरे की पौरितें प्रयाग लौं पुकारि परी वूझी उपहार लै कि सूझी अपहार ही
देव दुहूधार मैं अधार निराधारन कौं सूधे तर धार हीन सूधे सर धार ही ।२७३

इति रौद्र - अथ वीर रस

वीर रस

रन वैरी सन्मुषदुखी भिक्षुक आए द्वार
युद्ध दया अरु दानहित होत उछाह उदार ।२७४

यथा

राजकुल मंडन उदंड अरि दंडन अषिल षलषंडन अषंड बलवंत है
साधनि कौ साधुक असाधनि कौ वाधक समाधकु सकत सुष संपति समुंत है
दारन आगर उजागर सुजस दया सागर गहरि रस नागर महंतु है
देवरघुवीर वलवीर की कृपातैं पर वीर प्रहरत नर वीर भगवंतु है । २७५

देव भगवंतराउ मौजतै दयाउतिहिं सींची सब भूमि सुधा वीची कौ विवेकु है
दीसत दिगीसि सौं असीसत है ईस जाहि जाके सीस सकल छितीस अभिषेकु है
सिंह लौं गरजि गजराज गंज पुंजन सिंह लौं विदारै उर असुर अनेक है
सामुहै महारन सुभट भीरि मारन मैं सूर सरदारन हजारन मैं एक है । २७६

अथ भयानक रस

वस्तु भयानक देषि सुनि करि अपराध अनीति
मिलै सत्रु भूतादि ग्रह सुमिरै उपजति भीति ।२७७

भीति बढ़ै रसु भयानक दृग जल वैपथ अंग
चकित चित्त चिंता चपल विवरनता सुर भंग ।२७८

यथा

देव रिपु भूपन की सुंदरी अनूप गुन भूपन सरापैं गुन रूप मुख मूंदती
राजै राज रंजनि जै देषैं भंजनि चपल दृग कै जन हरासै हिय गूंदती

राउ भगवंत के नगारनि सुनति तै ब नगारिनु सुनति कढी, गढ़ी गढ़ रूंदती
औटक अगारन तै कोट के पगारन तै जोट कै नदी के कगारनि ते कूदती ।२७९

अथ वीभत्स

वस्तु घिनौनी देषि कै उपजै घिन हिय माँहि
घिन बाढै वीभत्स रस चित की रुचि मिटि जाहिं ।२८०

जान निसार नवाब के सीस परी जब सार की धार षटष्षट्
टूटि परै रुहिरा रु रुंड सौ छूटि परै छिति मंड भट भ्रट
भूत विनाल सिंगाल सिवागन नाचत दै वरताल पटप्पट
रीचि र वीचु परी चपि चाटत चाय चवात है षात चटच्चट ।२८१

अद्‌भुत रस

आह चरज देषै सुनै विस्मय वाढति चित्त
अद्‌भुत रस विस्मय वढै अचल सचकित निमित्त ।२८२

दैव दुज दीनन की काटि डारी विपतियौ संपति चहू गहि आन्यौई चहति है
वारी कारी देषत निकारी सेत कीरति वाई धाई वांधी सदा दाहिनी लहति है
धार के अधार धरि ल्याउत धुरंधरनि धरिनि धरिनि राधारनि उधारन कहति है
वैरिय विचारिनु की प्रानन की प्यासी सुवंर न---मैं लवटी- ------रहति है।२८३

श्री भगवंत महावलवंत चलाई है धर्म के मारग मैडे
काविलते पटना करनाटक लौं लागै न पाट न वाट उमैडे
वारि गहीरि न दीतर वारि वहाई क्यौं वैरिन के सिर वैडे
घाटहिते उतरै वै गए वहि वारह वाट अठारह पैडे । २८४

अथ सांत रस दोहा

तत्व ग्यान समत्व करि उपजत सात्विकि बुद्धि
शांत सरस सम-बुद्धि बढ़ि, पछितायौ मतबुद्धि ।२८५

यथा

करत उपास वन नास भूमि आसन उदास ह्वै अवासत जै संपति अनंत के
जय जूट उत्तमंग डोलत कुरंग संग रूषे सूषे अंग भूषे रंग सर नंत के
छाँड़े ईनै गीपिय विग्रह परिग्रहनि निग्रहनि ह्वै है इन इंद्रिय दुरंत के
जो गुचाही रही जु सरन भगवंत के कि रीग चाही रही जू चरन भगवंत के ।२८६

हास्य आदिक आठ रस इह विधि बरनतु लोग
थिति विभाव अनुभावऊ संचारिनु के योग ।२८७

सिद्धि श्री राधा रमन भाल अविधि वृजचंद
गन रघु गोकुल नाथ जय सिव दशरथ नदनंद ।२८८

श्री जैसिंह महीप वरश्री भगवंत कुमार
राजकाज सुख साज युत विलसौ सुजस उदार ।२८९

नगर इटाए वास जिहि काश्यप वंस प्रमोद
देवदत्त कवि कृत सरस श्री जयसिंह विनोद ।२९०

इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री चौहानवंसावतंश षीची कुल तिलक श्री भगवंतराइ वंदन जगदानंदन श्री जैसिंह कुमार सुख संदोहार्थं जयसिंह विनोद ग्रंथे कवि देवदत्त विरचिते हास्या रशादिकं रशाष्ट सष्टी करन सप्तम विनोद: ।७। मार्ग मासे शुक्ल पक्षे दुतीया मां चन्द्र वासरे संवत् १८५८ -- लिषित मिंद पुस्तकं सुषं नंदन शुक्ले स्वार्थं परोपकार्थं चा।